एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

ऐलोवेरा की वैज्ञानिक तरिके से खेती

(*डॉ. प्रियंका कटारा एवं डॉ. डी सी मीणा)
[1]विषय वस्तु विशेषज्ञ (हॉर्टिकल्चर), कृषि विज्ञानं केंद्र, फलोदी (जोधपुर-।।) - 342301
[2]सहायक प्रोफेसर (हॉर्टिकल्चर), सुरेश ज्ञान विहार युनिवर्सिटी, जयपुर – 302017
*संवादी लेखक का ईमेल पता: priyankakatara94@gmail.com

वानस्पतिक नामः– *एलो बारबेडेनसिस*

उत्त्पत्तिः– लिलिएसी

साधारण नामः– घृतकुमारी, ग्वारपाठा, ऐलोवेरा

घृतकुमारी, ऐलोवेरा जिसे अनेक नामों से जाना जाता हैं, प्राचीन समय से ही चिकित्सा जगत में बीमारियों को उपचारित करने के लिए इसका प्रयोग किया जा रहा हैं। ऐलोवेरा के गुणों से हम सभी भली–भांति परिचित हैं। हम सभी ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से इसका उपयोग किसी न किसी रुप में किया हैं। ऐलोवेरा में अनेकों बीमारियों को उपचारित करने वाले गुण मौजूद होते हैं। इसलिए ही आयुर्वेदिक उद्योग में घृतकुमारी की मांग बढ़ती जा रही हैं, एक बार लगाने पर 3–5 साल तक उपज ली जा सकती हैं और इसे खेत की मेढ़ पर भी लगा सकते हैं।

पौधें का वर्णन

ऐलोवेरा का पौधा बिना तने का या बहुत ही छोटे तने का एक गुदेदार और रसीला पौधा है, इसका फैलाव नीचे से निकलती शाखाओं द्वारा होता है। इसकी पत्तियां भालाकार, मोटी और मांसल होती हैं, जिनका रंग हरा, हरा–स्लेटी होने के साथ कुछ हिस्सों में पत्ती के ऊपर और निचली सतह पर सफेद धब्बे होते है, गर्मी के मौसम में पीले रंग के फूल उत्पन्न होते हैं। इसके पत्ते की लंबाई एक से डेढ़ फीट तक होती हैं तथा पत्तों के छोर नुकीले एवं किनारे कांटेदार आकृति के होते हैं।

ऐलोवेरा के फायदे

आज बाजार में ऐलोवेरा की मांग काफी बढ़ गई हैं, क्योंकि यह औषधीय पौधा होने के साथ–साथ इसका उपयोग सौन्दर्य उत्पाद बनाने के लिए भी बहुतायत रुप में होता हैं। ऐलोवेरा ठंडी, कड़वी, मधुर ऐसे कई गुणों से संपन्न होती है, इसकी मदद से कुमारी आसव बनाते है जो शारीरिक कमजोरी, खांसी, अस्थमा आदि बीमारियों में गुणकारी साबित होता हैं। त्वचा की तमाम समस्याएं जैसे मुहांसे, रुखी त्वचा, धुप से झुलसी हुई त्वचा, झुर्रियों, चेहरे के दाग, जलने, कटने पर, अंदरुनी चोटो पर ऐलोवेरा अपने एंटी फंगल गुण के कारण घाव को जल्दी भरता हैं। लोग सजावट हेतु इसे अपने घर में गमलों में भी लगा सकते हैं।

जलवायु एवं मृदा

ऐलोवेरा एक साहसी पौधा है, प्राकृतिक रुप से इसके पौधे को अनउपजाऊ भूमि में उगते देखा गया हैं। इसकी विशेषता यह है कि इसे बहुत ही कम पानी तथा अर्द्ध शुष्क क्षेत्र में भी आसानी से उगाया जा सकता हैं। ऐलोवेरा फसल के विकास के लिए सबसे उपयुक्त तापमान 20–22° से. होता हैं। इसकी खेती राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र में इसका व्यावसायिक स्तर पर उत्पादन

किया जा रहा हैं। इसे किसी भी तरह की मिट्टी में उगाया जा सकता हैं, लेकिन बलुई दोमट मिट्टी में इसका अधिक उत्पादन होता हैं।

किस्में

भारत में ऐलोवेरा की ज्यादा किस्में विकसित नहीं हुई है फिर भी JEC-111269, JEC-111271, सिम–सीतल, L-1, 2, 3, 49 आदि किस्में हैं।

खेत की तैयारी

किसी भी फसल को लगाने से पहले खेतों की जुताई की जाती हैं। जुताई से पहले 4–6 टन हरा गोबर की खाद प्रति एकड़, इसके साथ 50 कि.ग्रा. यूरिया + 60 कि.ग्रा. फास्फोरस + 13 कि.ग्रा पोटाश भूमि में मिला ले, उसके बाद भूमि की एक–दो जुताई के बाद खेत को पाटा लगाकर समतल बना लें, इसके उपरान्त ऊँची उठी हुई क्यारियों में 50:50 सेमी. की दूरी पर पौधों को रोपित करें। पौधों की रोपाई के लिए मुख्य पौधों के बगल से निकलने वाले छोटे–छोटे पौधें जिसमें 4–5 पत्तियां हो, का प्रयोग करें।

रोपाई का समय

इसकी रोपाई का सबसे उचित समय जुलाई–अगस्त हैं। सिंचित दशाओं में इसकी रोपाई फरवरी माह में उत्तम होती हैं। लेकिन हम साल भर इसमें रोपाई कर सकते हैं।

पौधे लगाने की दूरी

ऐलावेरा के पौधे की लाईन से लाईन की दूरी 50 एवं पौधे से पौधे की दूरी 50 रखने पर 45,000–50,000 पौधों की जरुरत रोपाई के लिए होगी।

सिंचाई

ऐलोवेरा शुष्क क्षेत्र के लिए उपयुक्त फसल मानी जाती हैं और यह पानी की कमी को आसानी से बर्दाश्त कर लेती हैं, लेकिन अधिक उत्पादन के लिए सिंचाई की आवश्यकता होती हैं। पौधे की रोपाई के बाद खेत में पानी दें। ऐलोवेरा की खेती में ड्रिप एवं स्प्रिंकलर सिंचाई अच्छी रहती हैं। समय पर सिंचाई करने से पत्तियों में जैल का उत्पादन एवं गुणवत्ता दोनों पर अच्छा प्रभाव पड़ता हैं। इस प्रकार वर्ष भर 4–5 सिंचाईयों की आवश्यकता होती हैं।

खरपतवार नियंत्रण

फसल को खरपतवार से मुक्त रखना चाहिए। प्रायः कम उपजाऊ जमीन में खरपतवार का प्रकोप कम होता हैं। फिर भी खेत में यदि खरपतवार की समस्या हो तो उसे नष्ट कर देना चाहिए। खरपतवार निकालते वक्त ऐलोवेरा के सूखे पत्तों और रोगग्रसित पौधों को भी निकालते रहना चाहिए।

रोग एवं कीट नियंत्रण

ऐलोवेरा में कीट एवं बीमारी का प्रकोप न के बराबर होता हैं। कभी–कभी पत्तियों एवं तनो को सड़ने एवं धब्बो वाली बीमारीयों के प्रकोप को देखा गया हैं, जो कि फफूंदी जनित बीमारी हैं। इसके नियंत्रण के लिए मैंकोजेब, रिडोमिल, डाइथेन एम–45 का प्रयोग 2.0–2.5 ग्राम 1 ली. पानी में डालकर छिड़काव करने से किया जा सकता हैं।

फसल की कटाई

ऐलोवेरा की पत्तियों की तुड़ाई पौधा रोपण के 8 माह बाद करनी चाहिए। जब पत्तियाँ पूरी तरह से विकसित हो जाए, परन्तु पत्तियो को तोड़ते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि पौधे के बीच की कम से कम नई पत्तियाँ पौधे में लगी हो, अन्यथा पौधे का विकास रुक जाएगा।

डपज

ऐलोवेरा की औसतन उपज प्रति हेक्टेयर 15–20 टन ताजी पत्ती का उत्पादन होता हैं।

बाजार व्यवस्था

आजकल ऐलोवेरा की डिमांड बहुत तेजी से बढ़ रही हैं। ऐलोवेरा का भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बहुत डिमांड हैं। जिसका मुख्य कारण औषधीय लाभ हैं। दवाई की कंपनी हो या कॉस्मेटिक प्रोडक्ट्स इन सभी क्षेत्र में ऐलोवेरा की डिमांड अच्छा हैं। किसानो को इन कंपनीयों में मुख्य रुप से टारगेट करें। वह ऐलोवेरा जूस बनाकर ऑनलाईन सेल करते हैं। अपनी ब्रांडिग के साथ तो यह आपके मुनाफे को दुगुना कर देगा।